

यूयसं पविवावानां, किल य २ हूं रु ६ ॥ स्वां वाय ॥ ॐ महावज्र ३
स्याद्वा ॥ पूजा ॥ तुनि ॥ ॥ ॐ कृष्णवर्णमहाकाशं वज्राक्षयं दं ३
छत्ती ॥ नञ्निपासदसं च, निवदछुनमामिदं ॥ ६ ॥ उच्च
वात्रसदथसशाकावचलयाय ॥ देवस्वाय ॥ ॥ ॐ वज्रा ३
दि सं पविवावानां किल य २ हूं रु ६ ॥ स्वां वाय ॥ महावज्राय ३

स्वाहा ॥ यज्ञा ॥ उनि ॥ ॥ उं तं मात्र का जात्र का नं उ च का नि
न ऊ नि या स द नं च स हा वि व न मा मि दं ॥ १ ॥ उ थं न
द दान स नृ त या य ॥ द व सा य ॥ ॥ उं ना नां सं वा न
वा ना नां कि न य र दूं रु ठ ॥ सां वा य ॥ ॥ उं उ नि स द
स्वाहा ॥ यज्ञा ॥ उनि ॥ उं नि व जी त स वा र्वा न व जा

क या स न ऊ नि मा त्र प द य द नं च उ पि षं च न मा मि दं ॥ २ ॥
उ थं नृ त या य द व सा य ॥ ॥ सूर वा जा य सं प्र वि वा ना नां
कि न य र दूं रु ठ ॥ सां वा य ॥ सूर वा जा य स्वा हा ॥ यज्ञा ॥ उ
नि ॥ ॥ उं नी व र्वा न स द का दं रि ष ना अ नि रि ष व नं व जा स
का या स द सं च सूर वा उं न मा मि दं ॥ ॥ थ या नि व न ॥ ॥

दमदिगनृहयाय ॥ पूजा ॥ वासा ॥ बुनि ॥ ॐ ॐ ह्यादि महावीनाः
ॐ ह्यादि ॥ धत्रीवः प्रमादिना नृहयाय ॥ हासावाय ॥ ॐ
आत्रि। हा निष्ठमानाः ॐ ह्यादि x ॥ हासाय नृहया नृहया
कनाठनः पिदां विज्ञाय ॥ दमकाधयानवत्रिविद्य ॥
ॐ अकाशमुख सर्वधर्माना ॐ ह्यादि ॥ ॐ नि कि न न धान वि

जितवसुधवा ॥ सवर्ग जालकालय ॥
धी ॥ ॥ धत्रिउ ॥ मधुवसु मधुः पितवासनवायावः
रुयकाय ॥ युवतं धानयाय ॥ ॥ ॐ वं रुववसुधवा विरु
॥ पितवर्गः एकमुखा षट्पञ्चाः ललीतासनं स्थाः स्नानमस्तः
वृषः एषिवीदवतां विरुयेः जाय ॥ ॐ रुवव नृहया
वाय हं रुद ॥ युवतं नीनां जनः आकखनः हां वाय ॥

नास्याः उमि ॥ ॐ पूर्वकृष्णमहाकाशं वज्रमृगवक्रक्री, वाग
दसं च महावीरं, उमां न कंकनमामिदं ॥ २ ॥ रुनां वक्रिमसया
व नृषया यः दत्तस्वाय ॥ ॥ वक्रादिसंयत्रिवात्राणां कित्रय २६
रु ॥ स्वां वाय ॥ यद्वां न काय स्वादाश ॥ पूजाः नास्याः उमि ॥ ॐ ज्ञां म
शुकं महावीरं वज्रकटिगुनिः पासदसं च यद्वां न कंकनमामि

दं ॥ ३ ॥ उथां २ उरुवसाया वनृषः दत्तस्वाय ॥ ॥ कृष्यः
त्रादि संयत्रिवात्राणां कित्रय २६ रु ॥ पूजाः नास्याः उमि ॥ ॥
नागनां स्वादा ॥ ॐ यद्वां न काय स्वादाश सत्रक यद्वां न कंकनमामिदं
वज्र उनीषा सदसं च यद्वां न कंकनमामिदं ॥ ४ ॥ उथां ३
गान साया वनृषः दत्तस्वाय ॥ ॥ गान संयत्रिवात्राणां कित्रय २६ रु

६॥ पूजाः स्नानः ॥ ॐ विद्यविद्यकानां स्वाहा ॥ ७॥ ॐ निसव नं नववीनं
 ॥ वज्रकसिगददंरिः ददिकउनीपासुनं च विद्याकं नमामिदं ॥
 ॥ ५ ॥ ॐ अथ जगन्मन्त्रं ॥ सा सं नं या य ॥ ६ ॥ व स्वाय ॥ ॐ अना
 दिसं पत्री वा नानां किं वयं रूंदं ॥ स्वां ॥ ॐ अननादिय स्वाहा ॥
 पूजाः ॥ ७॥ ॐ निसव नं नववीनं स्वस्ति पाप्म कठउनी सर्वं ॥

इष्टनिवात्रनं ॥ अथ विवन्तमामिदं ॥ ८ ॥ ॐ अथ नैमल्यसाय ॥
 नृणां याय ॥ ६ ॥ व स्वाय ॥ ॐ नैमल्यसं पविवा नानां किं वयं रूंदं ॥
 स्वां वाय ॥ ॐ नकिनाजाय स्वाहा ॥ पूजाः ॥ ७॥ ॐ नारिकुनः ॥
 निवर्तः रिह ॥ काधविद्यदं वज्रदं डाक नउनिः नकिनां नमामि
 मिदं ॥ ९ ॥ ॐ अथ वायुयस ॥ नृणां याय ॥ ६ ॥ व स्वाय ॥ ॐ अथ

स्वादा ॥ ॥ पंथा पदावयुजा ॥ सुनि ॥ वृद्धं नमस्वामि नमः ॥
वत्रयय पाणि मे स्वात्मकं गगनगङ्गं समन्तरुदं यक्रावधेय ॥
वदित्वा वृत्तं मङ्गलार्थं विस्तरितं क्रिगिरुखगह्वरनमाः
मिरुक्ताः सा के श्वत्रं गितं सांगः जूभा यया स गुणसागः यः राशि
नामो वि नमामि जूभा यया गनं ॥ ॥ धनखकन ॥ ॥ मादं न

दसिनालयः ॥ मां यत्रा मूपादाय जावदा धाधिममधुलतिखना
संयसत्रनंगच्छामि गनानां मनु ॥ ॥ ॥ दगुत्र गच्छकलपावः
सं ज्ञादसयसदृश्याथं ज्ञानगथा गनया ग्यानवाय कात्रम
संयस सत्रनवभरुयकं यसरुयमात्रधकं गुत्रयाकन
सां न्नाययागन्या ॥ ॥ धयात्रिव मधुलसलंखदायक ॥

॥ ॐ सन्नि सं द्य गात्राय निरुतः सन्नि सं द्य सं द्य नागमि रुतः सन्नि सं द्य
नागमि रुतः सन्नि सं द्यः ॐ सं त्व रुतः च ख रु गवानाया व सा कि नायः
आ व द ह ली य पा व द ह ली यः समा क व ली यः ॐ नू न व पृ थ क य द ग नी या
य ॥ न सै सं द्य व ली यः ॐ दं व त्रि य य म नादि ॥ ॥ थ या त्रि व वः
त्रि विय ॥ ॥ ॐ न सा क ना था यः द वा स व न व ज क्रा वा क सः स या स न

क ना य ॐ (भ ख ना व क सं त्व द्वा व न न य ना यः ॐ दं व त्रि य वा म नादि स
दि नाः ॐ द्वा २ स र्व स त्वा थ न रू ना यां स म्भ यं द ह ली य य नि द्वा य य ॥ ॐ आः
दिः ॐ दं व ज स ग न रु य द ॥ ॥ थ या त्रि व ॥ ॐ भा द्य पा स मं तु ल शिः
स न य ॥ ॥ ॐ स र्व स त्व दि ना था यः शु द्धं प रु नि नि र्म वं स मं न रु द य
वा गं रा ष मं तु वं सा व थी ॥ ॥ या द्या द्य या य ॥ ॥ ॐ ॐ भा द्य पा स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्वा नवाय ॥ ॐ अमाया भद्रं
स्वादा ॥ ॐ डीनेत्रा कदर्ये स्वादा ॥ ॐ अमृताय स्वादा ॥ ॐ अमायां क
माय स्वादा ॥ ॐ नावाय स्वादा ॥ रुक्मिणायाय स्वादा ॥ ॐ सुद्वनकुमा
वाय स्वादा ॥ ॐ आर्यावलाकिभवाय स्वादा ॥ ॐ खंखस्यपायाय स्वादा ॥
॥ ॐ हयग्रीवाय स्वादा ॥ ॥ पक्ष्मपदाय स्वादा ॥ ॐ ॥ ॐ डीकाः

वंसंखनाथं कवचं सप्तश्रीमानसः अमायासं नामानासा कनाथं नमामि हं ॥
॥ स्वकनथन ॥ रुक्मपूज ॥ थिंम्बपत्रभवाय ॥ अमायायाय ॥ वाक्
भवाय ॥ कथादेवता ॥ गणेशाय ॥ धनियानागिया न्द्रवद्रा ॥ कनभवा
सूर्य उदयनमरुतं द्वाकृत्वा ॥ यानि वंभनयाय मरुतं मयया न्द्रवद्रा
यमरुतं भवया वसु कसत्रा रुखाय मरुतं रुसखलाय मरुतं ॥ स्वा

१
स्नाननक्षत्रं मंगलं पावनक्षत्रं मंगलं मङ्गलं मङ्गलं धजावः आरुन
संज्ञा नक्षत्रं मङ्गलं दन्ता वि वि कन नादा गावगाव वृक्षवयाधिवत्र
धमावः स्वः धनं युत्रया आरुः सिवन धनत्रयमावः स्वः ॥ धनीवः अर्थया
य ॥ ॥ उं भव र मिनी र कव र पव र हव र दा हां र दी दी ॥ उं काव व न
धमधनं र धन र धूत्र र धिनि र रुव र मव र व सि स ह स य वी मधुनः

भनी वं कव र रुगव न सा मा दि र य म व वृक्ष कव व धनद विधिः द
व ग ल र यः चिह्नः अर्थवत्र या य दीः स्वादा ॥ धनीवः आरुन गवदः
२१ दा दान रान रान २१ मधुन स क निन क ॥ ॥ उं न मा ग ल र
या य ॥ उं न मा आरु व प्रा कि न गव ना य धा धि स त्या य म दा स त्या य म दा
का वृ नि का य ॥ न यथा ॥ उं अ मा य सिन म दा सिन यु द स त्या रु नः

सं ह न प न्न विरु खि न रु उ ध न स म न व न कि न ग न यः ॐ हं ४ आ हं
 रु ह स्वा हा ॥ ॥ ध या लि न व नि वि य ॥ ॐ अ मा य या म नै सा क द य
 वा य म हा का नू वी का य दा वी द द ख प स म ना यः अ ग व ना व क स ल
 दा न क्ष र य ना य यं वा म न स हि ना नू य ग य ॐ अ हं रु ह स्वा हा ॥ पं च
 य दा न पू जा स न क न पं वि य ॥ थं वी न ॥ द व पू जा या य ॥ स हा व नि वि

य द गृ वी व वी वि य य वी वा न पू जा स्वा न ग न क ॥ व रु का रु स ३ व न
 का न द्वा य क वि स उ न या य रु नू पू जा द क्रि षा कू मा य न कू म रि ष
 आ सि खा थान क्का य या व न ॥ स नि कू कू कू मा वी रु उ ना रु न ॥ ॐ ति
 अ रु मि व रु स मा फ ॥ ॥ ध या वी न कि व न वि धि ॥
 प वी या ग थ सं ग या रु न ॥ ॥ ॐ ३ ॥ ॥ ध या ना कू म यि ना य स

३ मधुसूयामधुसूयतया॥ नित्यवत्तमयाहमि॥

किं न नदं क॥ कात्र॥ दद्वखय॥ वा क्लृप्तं॥ पात्रं॥ धूमिथापना धूनकावसूर्याय॥ युवदा
नाय॥ मज्जातथं॥ किं नया दंदय॥ दगुत्री॥ पात्रन्यासधूप॥ हृमिश्व
नयाय॥ पंचसूत्रका॥ कदाच॥ आय॥ धूप॥ निमंनना॥ ध्यान॥ ॥ उं वि॥
समाधिवननरुमधुनिषंय॥ पूष्यमिकादिरि॥ चतुका॥ धूप॥ चतुदा॥
वं॥ धूपयटिकादिरि॥ नृमणीनादिरि॥ श्वसंयुक्त॥ रुक्मिनसंस्तुसमस्तु

श्रितं नित्यं

किं न नया॥ धूप॥ न॥ नित्यं॥ वाधियमिदिरावः॥ आकखनपायादि॥ धूप॥ वास्यामुनि॥ ॥
ॐ नित्यं हृमिश्वधनविधि॥ ॥ धूपयविक्रानदद्वयुक्तं॥ जाय॥
धूप॥ ध्यान॥ ॥ उं न नया धूप॥ उगद्वजं हृयदं पायदं यिदं॥ ॥
निद्रिकमिमिदिरुय॥ रतिनिशंनगानरुवंजात॥ विश्ववक्तुसत्किनं॥
दंकात्रविक्रान॥ कदाच॥ अविस्तुक्तविक्रानं॥ निसंश्वय॥ खंडितरुन॥

५॥
५॥

वज्रपा का नः वज्रयं कुत्रः वज्रविमानः वज्रसत्रजात्रः वज्रमयः
हसि विरगवः ॥ मम श्रुति निः वज्रसत्त्वया मयः ॥ हे साक्षी वीज्याः यदि म
नः वज्रहं का नः विश्वा क्रस्यस्कः ॥ वयां कात्री वा सां वा विरचनन
यं ना वि वक्रथा ॥ कृद्वा कल्या ना न वज्रा क्रीत्य मजी चि सं वय कं ववयः
नि वति खी वज्र गदिनं शुं वृद्धा निः नि वयि न दत्री म मूत्र स वा गन

वा उ व कूट था ॥ दष्टा कूट कें वल जि का प नि मुख स ॥ रग कूटि लः व
क व कूट नः नः ॥ गणि (ग व वं) लला क रूपा यं व पा व ग ला वल वि नः ॥ व्या
वर्म वर्म व व व वं नि या न व व व यि मा द क व क वि द व क ल्या सां ॥
वज्र मू नि दयं ॥ प वा सां स्वा रु प रूपा समा प त्वं प वा सां अं कू स पा (ग) ॥
वा मा सां क पा व ख द्वां ग उ ग दि शुं हं का व रू व धा सा नं कं ॥ द म का

यस्यां समयाय न ॥ ॥ जायधूप निमन्तना यं वायदात्र पूजा ॥ जाः
 स्या ॥ उति ॥ मंगत्रे गथाः ॥ ॐ धर्मा ॥ ॐ न्यादिना कया गस्यादि ॥ ॐ नि
 किन्नरदत्र पूजा विधि ॥ ॥ थयात्रिवः थकात्रिनं किं हीनरुद
 वक्रनकं नयात्र ॥ शुभं मधुवस इदिय ॥ ॐ गानकन इवि
 य शुभं नित्ययाय ॥ ॥ ॐ उपदसं पत्रिवो नानां किन्नरय
 पृथ्व्या ॐ

ॐ कापका ॥ न्यः
 रुद्रं ॥ ॐ वज्रमृगनाय कटय रद्दं रुद्र ॥ देव स्याय ॥ देव पूजा
 ॥ वलु थायाव मुकयाय ॥ ॐ नमस्तु को धरा जानां सर्व इक्षु नीवा
 त्रणी ॥ ॐ लाक्षा विचावी ॥ सर्व काधं नमामिदं ॥ १ ॥ थनीव ॥
 दक्रिष्णयाव नृथयाय ॥ देव स्याय ॥ ॐ उमा दिसं पवी वा ना
 णां किन्नरय रद्दं रुद्र ॥ स्वां वास ॐ उमां नका नायसादा ॥ ३ ॥

केन समिपतय

॥ ॐ अन्यन्नान्यन्नगमासर्वधमाना ॐ यत्र स्यान्नगमासर्व
धर्मा अन्यन्नान्नगमासर्वधर्मा ॐ आहू ॥ ॥ ॐ नि शु का
धियासनविधि ॥ ध्वनीव दवनाधियासनयाय ॥ मलुन
स न्यवनस्यानवाय न्यवनवउ नन दवगुयास्यानवाय
॥ आकषनयाद्यादिपूषंन्यास ॥ ॥ ॐ श्रीवकुहद्वर ॥

कादाकिलीजात्रसंवत्तं x ल्यादि ॥ ॐ वज्रवे आचनोयहूँरु
ह x ॐ दाकिनियहूँरुह ॥ नामय x रवउ आह x नूयिधीय
x वेउकआ x समयकआ x विसमय x समयविसमय x क
व x पुवंदाय x कूवू x वंध x ल्यादि ॥ यंचयदात्रपूजा ॥ ॐ
निदवनाधियासनविधी ॥ ॥ ध्वनीव सुरुभाय ॥ ॐ

अथि श्वन वादा वः दिगसं विदिगसं धय ॥ ॐ ॥
 न वजः सुभ प्रयं च मदा मंड न सुभ नाय दं ॥ ॐ क्रान ना
 वजः सुभ मेयं च मदा मणुल सुभ नाय दं दं ॥ ॐ अ
 धर्म वजः सुभ मेयं च मदा मणुल सुभ नाय दं ॥ ॐ अ ॥
 चि न वजः सुभ मेयं च मदा मणुल सुभ नाय दं ॥ पंच पदा न
 वतु ल का य

न क र उ ॥ ॥
 न पूजा ॥ सुभ धाय सं गय ॥ ॥ ॐ श्री नारिकि व पूजा ॥
 नारिकि नया धाय सं यं च व ग न या य व न ध न ॥ ॥
 धान या दा व धा न ॥ ॥ ॐ धर्म धाय व यं सु दं सत्य धा ॥
 सु सु धा न यं स्वयं वज ध धा ना जाः सर्व मा धा ग ना व यं स ह
 मा धा ग ना य व य ॥ सर्व धाय विनी मू गं व का य न व स ह दि

अथि श्वन वादा वः दिगसं विदिगसं धय ॥ ॐ ॥

श्रीमन् ॥

दशमोऽध्यायः ॥

सम्बन्ध विरहितः अमृतानन्दं मृदाभां कखयान पयसागनः मा
त्रकः आयनधनकावः दवसाय ॥ धनगुणं वज्रसत्तः नाग
त्र आगमयिष्ये कङ्कः कवदवना मात्रका धूनकावः ॥ कि
नाङ्गयः सूर्यायः पागाद्यः पूजारुत्रकययक ॥ गुणमलुत्रसः
खवत्रिदगुत्री त्रिसमाधिः । आयः धूपः कसन्त्यास पाठनास

५ मलुत्र खया वाक

॥ धंवीव मलुपूजा पाठन्यासः धंवीव किवनपूजाः किवन
आनः धवीव दवपूजा ॥ धयावीवः क्रमायः मंउरुयददिलाः
द्यं भवादन ॥ स्वस्ति वाक्कः स्वयाकत्र ॥ वाकत्र २ दं कात्र द
नादावा द्वात्र पाठक द्वाकत्र ॥ ॐ सरुनि २ मृटकाप
य २ दं रुद्र आनयदा रुगवन विद्यावाजदं पवीदि रु

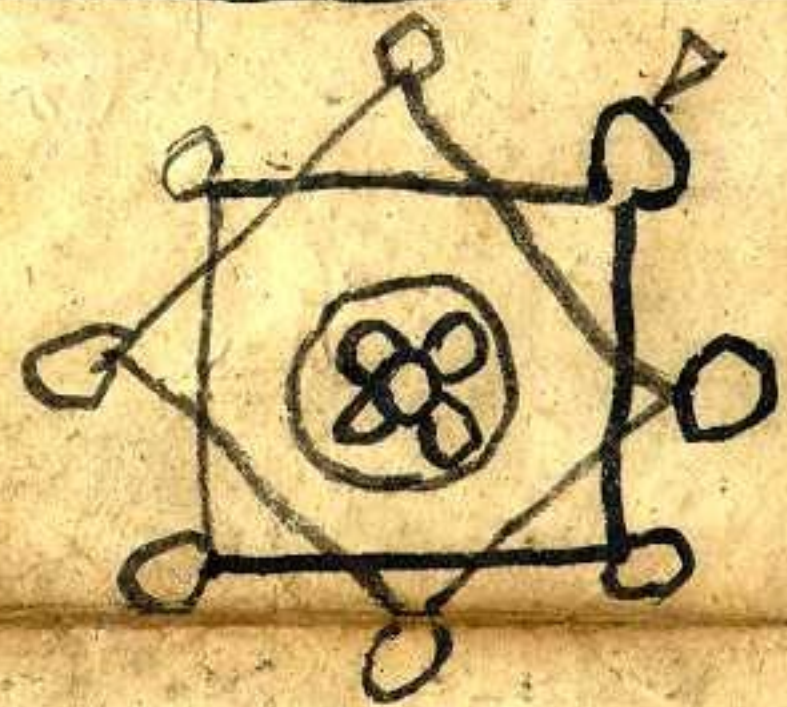
सुस्थामत्रकपिनद्वंद्वं ॥ धंतीवृद्धिगपूजायनिमात्रं ॥
आदिपंधूनकावृद्धमनुवयाखायुनिय ॥ द्वंकावृद्धताशाखा
स्यादि ॥ रुनिनिद्वं ४ धंतीवृद्धमनुवयाखायुनिय ॥
॥ वत्रिवियः सांकननक ॥ शुभ्रपूजादक्रिनायं वाद्वं
शुभ्र ॥

नागाः कक्षात्तेववि ॥ तानखतर्कका ॥ ॥ सुंदरगंगस
मस्मानः सिनयसविक्ताः वासकिनागः गतिताम्रवा
॥ ॥ गहलसम्पत्त्याः स्वाभ्यः उल्लेखविक्ता ॥ द्युनिद्वं म
वातकुकनागः ॥ ॥ सुंदरगंगस ॥ वावृद्धः ॥ वक्रिवायुना
क्रेष्मादिगविदिगः वसिदेवतिथ ॥ ॥ सुंदरगंगस

समसा न्यः च निमविलसलः नाचमि सह मैजा नन्द
प॥ ६॥ क क पिद्या नाः वस्मि त भव्या ~~का~~ जाजी
कु न समसा न्यः क क रु क नागम॥ ६॥ कल क
र लवो वे ति के भव्याः सित भिज नागमः युत क
वि क्रा ॥ ६॥ अत ता समसा न्यः ज ख वी ल न

गमः वु य रु भव्याः व रु म ति न्वा ॥ ६॥ ल वि मी
वत समसा न्यः क न रु वि क्राः द्यु नित भव्याः
म ता व रु नागम॥ ६॥ द्या नाः य के भ म सा न्यः
व कि त वि क्राः अ न रु नागम॥ ६॥ पु द्या ना य के
भ म सा न्यः ॥ ६॥ स न न भ चा धु ६॥ कि कि वा नाः अ
इ न वि क्राः क्री क नागम व ख न भव्या ॥ ६॥ द्या न सर

व ना। रु रु व रु विव द नाः वस्व द्वा द स न प्र ना॥ ६॥
 ह न पी क ना वा नः ग र ह स व नाः का पि न ति वि न
 नः रा टु पि व द ना॥ ८॥ — ॥ २ ना ग न पि त त न न ति ॥ १२॥
 त ने ग थ ना व क र ॥ क र व ग द ह व रु ना ॥ १६ ० रु द गी त



शो नि धा का य ज

शालि धा तु लु मा नाः कू व ग नूः श ग नः हे न वं स्या स्र प द्यंः चा
 न्धा का नि ला थाः गि ह व स म न ह नाः स्वा नु ता क्क न्द वि धा
 श नन्द न रु मा नाः नि नृ प म स्र ग नंः स्वा ग वि धा ग स्र ग मः श
 धा न रु मा नाः नि नृ ग दः नि ल यः पा तु वं आ स म्ब नो रः
 स र्वे ना थ ग ना सा नः स र्वे ना थ ग ना ल यः स र्वे ध र्मा ग न ना म्भः
 द ग म लु ल मूर्त्त मंः सा नु ध र्मा ग स र्व नं ह्ना न व र्था वि सा ध कं

यनमस्तुते कन्या॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ नमः॥ श्रीवज्रसंवराय ३॥ यथ्ययं
मल्लुलः शुद्धवृद्धा नाकाय मूर्तमः रग्या सिव्यगमानस्यः स
कृताऊलिमद्वया॥ ॥ शसिष्यस॥ समस्तगथागतस्यनः
श्वपत्रयगयाः थमस्तुमदलः शुपनिस्यनदसिनया कृन् हनाथ
मदलरुयिओगयिथमस्तुमदलः रकिपूर्वयादं कृताऊलिः
हाऊत्रयाओः अथायादाओः दज्ञनया कृन् ॥ ॐ दगुमल्लु
लः यस्यः साद्यावाहनसंपतिः त्वं वृद्धकलजागाः मृदामस्तु

शिवयुक्तिवृत्त॥

धितिन॥ ॥ शसिष्यस॥ आओशिवमाः वृद्धयाकलसः जागकृ
लाः मृदा नाः मल्लु नाः अविथानयात्व॥ ॥ सपदासर्वसिद्धिनाः
समयाअरुविष्यसिः वज्रयक्षा गत्रलिंगं मगुधालाधनंकृत् ॥ शः
सिष्यस॥ ॥ आओशिवमाः समस्तसिद्धिनागाः थसमयज्ञानः
यापुलाओनः ऊउरुमस्तुयः उपायओः पलाओः गगायाकनः स
गसं अरुदिगया कृन् ॥ ॥ थनमल्लुलसधियाओकन्यः॥
॥ सिष्यावाय॥ ॥ वज्रमल्लुमदामंदलः पविता नृदं ॥ आग

विष्णुसहस्रनाम

विवासन ॥ ॥ ध्यात्रीवसुजाविवासन ॥ वजनधिय ॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं मः स्वस्वमं ज्ञनः स्वस्वदवका विविक्तः ॐ वज्रसम
यस्रं मानिक भू ह ह ॥ ॥ ॐ निरुजा विवासन ॥ ध्यात्रिव
वजाविवासनः ॥ ॥ ॐ कावजं यं वसु चिकमि न व व वि
राय ॥ ॐ वज्रसत्त ह ॥ ॥ ॐ निवजा विवासन ॥ ॥ ध
महलसहस्रपूजा ॥

ऊ ५

यात्रिव संखा विवासन याय ॥ यं कावजं मि न व रूः मं ख ध व
न व रूः वा सु कि ना ग वा ऊं विरायः ॥ ॐ श्री मं ख या न ना ग वा
ऊं न म सादा ॥ ॥ ॐ नि मं खा विवासन विधि ॥ ॥ धं वी न
यं ॐ विवासन याय ॥ ॥ ॐ अ का व यं ॐ विराय ॥
ॐ वज्रकर्म वज्रयं यु अ अ सादा ॥ ॐ नि यं ॐ विवासन वि

धि॥ ॥ नमो नमो विद्यासनयाय ॥ नीत्रत्रंग ॥ वज्रमणिः
 सं ॥ ॥ ॐ हूं वज्रचिरुसमयहं ॥ ॥ नमो नमो ॥ ॥
 ॐ वं वज्रचिरुसमयहं ॥ ॥ जयत्रंगम ॥ ॐ ओः वज्र
 चिरुसमयहं ॥ ॥ आदूत्रंग ॥ ॐ ह्रीं वज्रचिरुसमयहं ॥ ॥
 ॥ आदूत्रंग ॥ ॥ ॐ स्व वज्रचिरुसमयहं ॥ ॥ पंचपदावः

योगसिद्ध्या

पूजाः प्राप्ताः इति ॥ ॐ नमो भगवते विद्यासनविधी ॥ ॥ थया
 त्रिवः मलुत्रयादथसः यंचसूक्तथयनायादावः ॥ ॐ
 मलुत्रलूमक्षयुक्तालिमखत्माचार्यः चक्रसत्रयं उरुजमा
 धकं स्वलुत्रादायत्रयं विरुवा ॥ ॥ थनक्रमायनयादावः
 गुवः मायावः ॐ नमो भगवते सत्यसदादावः सुयदः ॥

निमन्त्रयन्ति॥



ॐ वसुधा गाय स्वाहा ॥ ॐ मानिरु दाय स्वाहा ॥ पुरु दाय स्वाहा ॥ ॥
यश्च पुद्गात्रपूजा वासा कुम्भि ॥ मय मंखसदइ आक्रम यश्च न त्रः
नया व x धनवा ॥ ॥ ॐ चदहि चदिमहादवी एधिविसा कमा क
य सचन न्न संपूर्ण दिवा वं का नरु विमं दानना पुत्रनिद्या ख वज्र स
नय पक्तिन गदी ली ॥ नु न दय ॥ ॥ क स सा धय ॥ ॐ दिदिदि

दिदं १ स्वाहा ॥ धन पुत्रयाय ॥ ॥ त्वं दवी साखिरु नामिः सर्व
वृद्धा ननायिना वयानियवि मय वृ रुमिया वमिमा रुन
यथा मात्र वनं रु न्न सा कर्मिद वनायिना तथा मात्र व नं जि ला मं
उलं सय या मिदं ॥ ॥ धन व ऊं थिय ॥ ॥ ॐ म द नि व डि
रु न व ऊ व न रु ॥ ॥ य व पुद्गात्रपूजा ॥ वासा वं भ वा द

ननुमि ॥ दनिविय ॥ ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
नमो ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
व. क. व. सा. धि. वा. स. न. वा. य. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पंचसूक्तका. उ. न. स. व. उ. ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ स्वस्ति ॥ ॥ क.

२५५

सः श्यादु नंगः खन्नसः वादु नंगः ॥ अमिथाय नायादाव ॥ अ
 वार्यनः आपः पूयः नीवाऊन ॥ ॥ उं वजा मकादकथथ
 दूतयफः मदातपफ स्वादा ॥ अटिटि सदादि जनसुखां क
 हानसत्त्वमानियपूर्वका समयचकं मदावागन अविहयं वा
 विविक्तं यं विहा वा ॥ ॥ यं यं यं यं ॥ अमि कन्नसा